CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

**2008-2022**

**15 वर्ष हल प्रश्न-पत्र**
**सिविल सेवा मुख्य परीक्षा**

# समाजशास्त्र

**प्रश्नोत्तर रूप में**

**सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित**

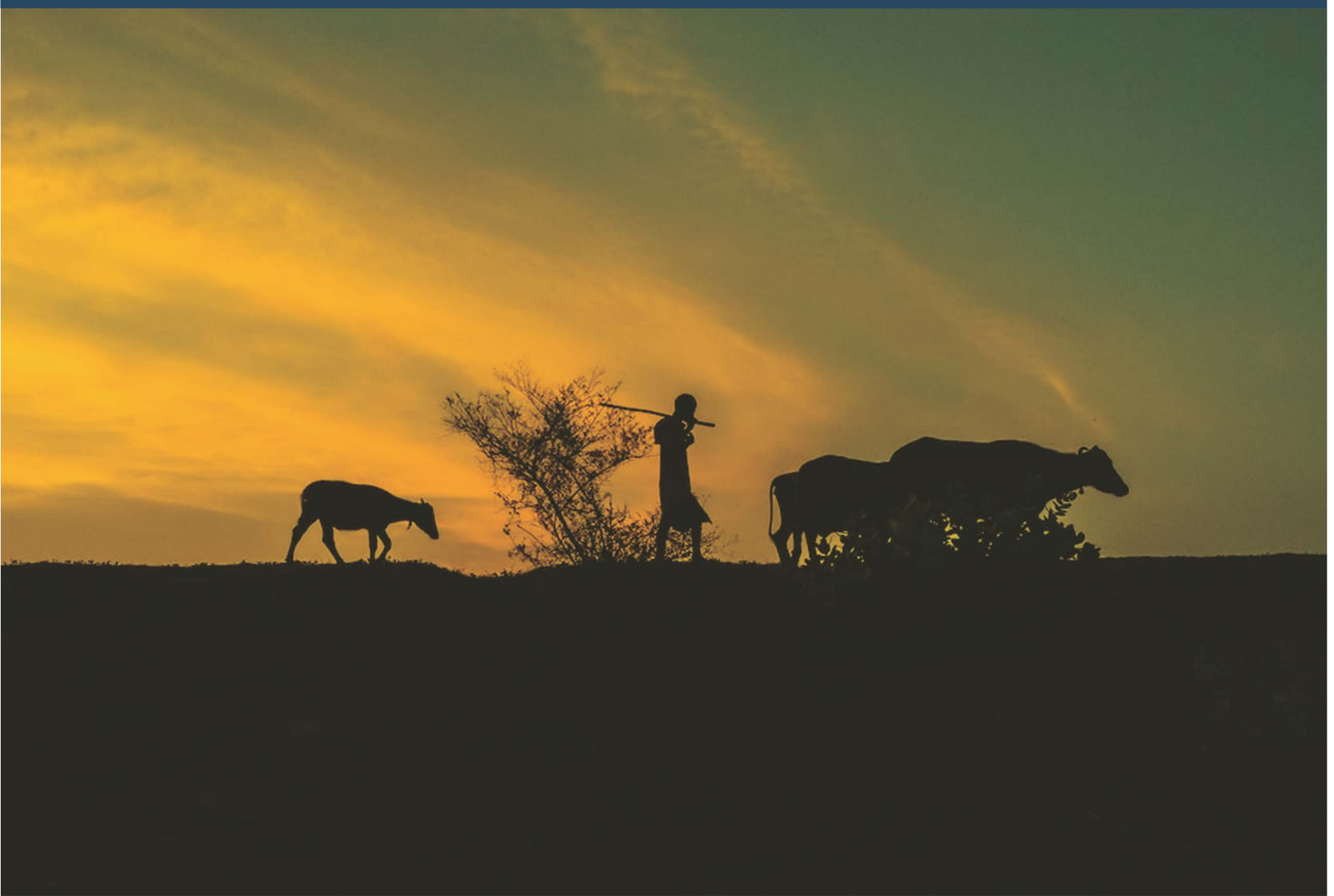

# 15 वर्ष (2008-2022)

## अध्यायवार मुख्य परीक्षा हल प्रश्न-पत्र

# समाजशास्त्र

## प्रश्नोत्तर रूप में

## सिविल सेवा परीक्षा के लिए

**संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग तथा अन्य समकक्ष प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी**

**संपादकः** एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
**लेखन एवं प्रस्तुतिः** क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

# अनुक्रमणिका

## विषयवार हल प्रश्न-पत्र, 2008-2022

### प्रथम प्रश्न–पत्र


1. **समाजशास्त्रः विद्याशाखा..... 1–18**
   - क) यूरोप में आधुनिकता एवं सामाजिक परिवर्तन तथा समाजशास्त्र का अविर्भाव
   - ख) समाजशास्त्र का विषय-क्षेत्र एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों से इसकी तुलना
   - ग) समाजशास्त्र एवं सामान्य बोध।

2. **समाजशास्त्रः विज्ञान के रूप में ..... 19–34**
   - क) विज्ञान, वैज्ञानिक पद्धति एवं समीक्षा
   - ख) अनुसंधान क्रिया विधि के प्रमुख सैद्धांतिक तत्व
   - ग) प्रत्यक्षवाद एवं इसकी समीक्षा
   - घ) तथ्य, मूल्य एवं उद्देश्यपरकता
   - ड़) प्रत्यक्षवादी क्रियाविधियां

3. **अनुसंधान पद्धतियां एवं विश्लेषण..... 35–57**
   - क) गुणात्मक एवं मात्रात्मक पद्धतियां
   - ख) दत्त संग्रहण की तकनीक
   - ग) परिवर्तन, प्रतिचयन, प्राक्कल्पना, विश्वसनीयता एवं वैधता

4. **समाजशास्त्री चिंतक..... 58–101**
   - क) कार्ल मार्क्स- ऐतिहासिक भौतिकवाद, उत्पादन विधि, विसंबंधन, वर्ग संघर्ष
   - ख) इमाईल दुखीम- श्रम विभाजन, सामाजिक तथ्य, आत्महत्या, धर्म एवं समाज।
   - ग) मैक्स वेबर- सामाजिक क्रिया, आदर्श प्रारूप, सत्ता, अधिकारीतंत्र, प्रोटेस्टेंट नीति शास्त्र और पूंजीवाद की भावना।
   - घ) तालकॉट पार्सन्स-सामाजिक व्यवस्था, प्रतिरूप परिवर्त
   - ड़) राबर्ट के मर्टन-अव्यक्त तथा अभिव्यक्त प्रकार्य अनुरूपता एवं विसामान्यता, संदर्भ समूह
   - च) मीड- आत्म एवं तादात्म्य

5. **स्तरीकरण एवं गतिशीलता ..... 102–121**
   - क) संकल्पनाएं-समानता, असमानता, अधिक्रम, अपवर्जन, गरीबी एवं वंचना
   - ख) सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत - संरचनात्मक प्रकार्यवादी सिद्धांत, मार्क्सवादी सिद्धांत, वेबर का सिद्धांत
   - ग) आयाम-वर्ग, स्थिति समूहों, लिंग, नृजातीयता एवं प्रजाति का सामाजिक स्तरीकरण
   - घ) सामाजिक गतिशीलता-खुली एवं बंद व्यवस्थाएं, गतिशीलता के स्रोत एवं कारण

6. **कार्य एवं आर्थिक जीवन ..... 122–136**
   - क) विभिन्न प्रकार के समाजों में कार्य का सामाजिक संगठन-दास समाज, सामंती समाज, औद्योगिक/पूंजीवादी समाज
   - ख) कार्य का औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन
   - ग) श्रम एवं समाज

7. **राजनीति और समाज..... 137–156**
   - क) सत्ता के समाजशास्त्रीय सिद्धांत
   - ख) सत्ता प्रव्रजन, अधिकारीतंत्र, दबाव समूह, राजनैतिक दल
   - ग) राष्ट्र, राज्य, नागरिकता, लोकतंत्र, सिविल समाज, विचारधारा
   - घ) विरोध, आंदोलन, सामाजिक आंदोलन, सामूहिक क्रिया, क्रांति

8. **धर्म एवं समाज..... 157–167**
   - क) धर्म के समाजशास्त्रीय सिद्धांत
   - ख) धार्मिक क्रम के प्रकार : जीववाद, एकतत्ववाद, बहुतत्ववाद, पंथ, उपासना, पद्धतियां
   - ग) आधुनिक समाज में धर्म : धर्म एवं विज्ञान, धर्म निरपेक्षीकरण, धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद, मूलतत्ववाद

9. **नातेदारी की व्यवस्थाएं..... 168–182**
   - क) परिवार, गृहस्थी, विवाह
   - ख) परिवार के प्रकार एवं रूप
   - ग) वंश एवं वंशानुक्रम
   - घ) पितृतंत्र एवं श्रम का लिंगाधारिक विभाजन
   - ड़) समसामयिक प्रवृत्तियां

10. **आधुनिक समाज में सामाजिक परिवर्तन..... 183–210**
    - क) सामाजिक परिवर्तन के समाजशास्त्रीय सिद्धांत
    - ख) विकास एवं पराश्रितता
    - ग) सामाजिक परिवर्तन के कारक
    - घ) शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन
    - ड़) विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन

# द्वितीय प्रश्न-पत्र

## भारतीय समाज : संरचना एवं परिवर्तन

### भारतीय समाज का परिचय


1. **भारतीय समाज के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य.....211-222**
   - क) भारतीय विद्या (जी एस धुर्ये)
   - ख) संरचनात्मक प्रकार्यवाद (एम.एन. श्रीनिवास)
   - ग) मार्क्सवादी समाजशास्त्र (ए.आर. देसाई)
2. **भारतीय समाज पर औपनिवेशिक शासन का प्रभाव..... .....223-229**
   - क) भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि
   - ख) भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण
   - ग) औपनिवेशिककाल के दौरान विरोध एवं आंदोलन
   - घ) सामाजिक सुधार


### सामाजिक संरचना


3. **ग्रामीण एवं कृषिक सामाजिक संरचना.....230-239**
   - क) भारतीय ग्राम का विचार एवं ग्राम अध्ययन
   - ख) कृषिक सामाजिक संरचना-पटटेदारी प्रणाली का विकास, भूमि सुधार
4. **जाति व्यवस्था.....240-252**
   - क) जाति व्यवस्था के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य (जी.एस. धुर्ये, समसन श्रीनिवास, लुईद्यूमां, आंद्रे बेतेय)
   - ख) जाति व्यवस्था के अभिलक्षण
   - ग) अस्पृशयता-रूप एवं परिप्रेक्ष्य
5. **भारत में जनजातीय समुदाय.....253-263**
   - क) परिभाषीय समस्याएं
   - ख) भौगोलिक विस्तार
   - ग) औपनिवेशिक नीतियां एवं जनजातियां
   - घ) एकीकरण एवं स्वायता के मुद्दे
6. **भारत में सामाजिक वर्ग.....264-269**
   - क) कृषिक वर्ग संरचना
   - ख) औद्योगिक वर्ग संरचना
   - ग) भारत में मध्यम वर्ग
   - घ) परंपरागत भारतीय सामाजिक संगठन
7. **भारत में नातेदारी की व्यवस्थाएं.....270-282**
   - क) भारत में वंश एवं वंशानुक्रम
   - ख) नातेदारी व्यवस्थाओं के प्रकार
   - ख) भारत में परिवार एवं विवाह
   - घ) परिवार घरेलू आयाम
   - ड़) पितृतंत्र, हकदारी एवं श्रम का लिंगाधारित विभाजन
8. **धर्म एवं समाज.....283-291**
   - क) भारत में धार्मिक समुदाय
   - ख) धार्मिक अल्पसंख्याकों की समस्याएं


### भारत में सामाजिक परिवर्तन


9. **भारत में सामाजिक परिवर्तन की दृष्टियां.....292-309**
   - क) विकास आयोजना एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था का विचार
   - ख) संविधान, विधि एवं सामाजिक परिवर्तन
   - ग) शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन
   - घ) महिला और समाज
10. **भारत में ग्रामीण एवं कृषि रूपांतरण.....310-319**
    - क) ग्रामीण विकास कार्यक्रम, समुदाय विकास कार्यक्रम, सहकारी संस्थाएं, गरीबी उन्मूलन योजनाएं
    - ख) हरित क्रांति एवं सामाजिक परिवर्तन
    - ग) भारतीय कृषि में उत्पादन की बदलती विधियां
    - घ) ग्रामीण मजदूर, बंधुआ एवं प्रवासन की समस्याएं
11. **भारत में औद्योगिकरण एवं नगरीकरण.....320-334**
    - क) भारत में आधुनिक उद्योग का विकास
    - ख) भारत में नगरीय बस्तियों की वृद्धि
    - ग) श्रमिक वर्ग : संरचना, वृद्धि, वर्ग संघठन
    - घ) अनौपचारिक क्षेत्रक, बाल श्रमिक
    - ड़) नगरी क्षेत्र में गंदी बस्ती एवं वंचना
12. **राजनीति एवं समाज.....335-343**
    - क) राष्ट्र, लोकतंत्र एवं नागरिकता
    - ख) राजनैतिक दल, दबाव समूह, सामाजिक एवं राजनैतिक प्रव्रजन
    - ग) क्षेत्रीयतावाद एवं सत्ता का विकेन्द्रीकरण
    - घ) धर्म निरपेक्षीकरण
13. **आधुनिक भारत में सामाजिक आंदोलन.....344-358**
    - क) कृषक एवं किसान आंदोलन
    - ख) महिला आंदोलन
    - ग) पिछड़ा वर्ग एवं दलित वर्ग आंदोलन
    - घ) पर्यावरणीय आंदोलन
    - ड़) नृजातीयता एवं अभिज्ञान आंदोलन
14. **जनसंख्या गतिकी.....359-370**
    - क) जनसंख्या आकार, वृद्धि संघटन एवं वितरण
    - ख) जनसंख्या वृद्धि के घटक : जन्म, मृत्यु, प्रवासन
    - ग) जनसंख्या नीति एवं परिवार नियोजन
    - घ) उभरते हुए मुद्दे : काल प्रभावन, लिंग अनुपात, बाल एवं शिशु मृत्यु दर, जनन स्वास्थ्य
15. **सामाजिक रूपांतरण की चुनौतियां.....371-378**
    - क) विकास का संकट : विस्थापन, पर्यावरणीय समस्याएं एवं संपोषणीयता
    - ख) गरीबी, वंचन एवं असमानताएं
    - ग) स्त्रियों के प्रति हिंसा
    - घ) जाति द्वंद्व
    - ड़) नृजातीय द्वंद्व, सांप्रदायिकता, धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद
    - च) असाक्षरता तथा शिक्षा में समानताएं

# पुस्तक के संबंध में

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित विगत 15 वर्षों (2008-2022) के प्रश्नों का अध्यायवार हल

पुस्तक के मूल्य को पाठकों के पहुंच तक बनाए रखने तथा पृष्ठ संख्या को सीमित रखने हेतु पूर्व के दो वर्षों (2006-2007) के प्रश्नों को पुस्तक से हटाया जा रहा है। यह सामग्री chronicleindia.in पर पाठकों के लिए नि:शुल्क उपलबध होगी।

**प्रश्नों को हल करने की प्रकृति:** पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर को मॉडल हल के रूप में दिया गया है। प्रश्नों को हल करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि उत्तर सारगर्भित हो, तथा पूछे गए प्रश्नों के अनुरूप हो। पुस्तक में प्रश्नों के इतर भी विशिष्ट जानकारी को उत्तर में समाहित किया गया है, ताकि अभ्यर्थी इसका उपयोग न सिर्फ हल प्रश्न पत्र के रूप में, बल्कि अध्ययन सामग्री के रूप में भी कर सकें।

**पुस्तक का उपयोग कैसे करें?:** इस पुस्तक का उपयोग अभ्यर्थी अपने उत्तर लेखन शैली में सुधार लाने तथा प्रश्नों की प्रवृति व प्रकृति को समझने के लिये कर सकते हैं। किसी भी परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न इसमें सबसे लाभदायक होते हैं। पुस्तक में दी गई सामग्री का इस्तेमाल बिंदुवार, निश्चित शब्द सीमा का पालन, उप-शीर्षक एवं आरेख आदि का प्रयोग अभ्यर्थी अपने उत्तर लेखन शैली के अभ्यास हेतु आधुनिक परिपेक्ष में कर सकते हैं। पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर उसके सम्बंधित वर्ष के अनुसार ही दिया गया है।

**समाजशास्त्र- एक वैकल्पिक विषय के रूप में:** आईएएस परीक्षा में कला वर्ग के परीक्षार्थी समाजशास्त्र को भी एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुन सकते हैं। यह मूल रूप से समाज से जुड़ा हुआ विषय है और समाज के बारे में हमारी गहनता की परख करता है। इसका मुख्य उद्देश्य मानव समाज के सामाजिक संरचना का अध्ययन करना है। समाजशास्त्र सभी सामाजिक संबंधों, मानव समूहों के बीच परस्पर सहयोग व संघर्ष का क्रमबद्ध अध्ययन करता है। यहाँ सामाजिक सन्दर्भ में मनुष्य के व्यवहार का, उनके बीच के संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने की चेष्टा की जाती है। एक सामान्यीकृत विषय होने के कारण यह सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्रों में समाज, सामाजिक न्याय, सामाजिक मुद्दों और नीतिशास्त्र- पेपर-IV से संबंधित केस स्टडी में मदद करता है। समाजशास्त्र को एक सुरक्षित विकल्प के रूप में माना जाता है क्योंकि इसे वैकल्पिक विषय के रूप में तैयार करने के लिए किसी विशेष ज्ञान या शैक्षणिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता नहीं होती है।

यह पुस्तक छात्रों को संघ लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षा के आलावा राज्य लोक सेवा आयोगों (उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, एवं झारखण्ड) के बदले हुए पाठ्यक्रम में आयोजित होने वाले सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के समाजशास्त्र के प्रश्न पत्र में उपयोगी साबित होगा।

**संपादक**

1

## प्रथम प्रश्न-पत्र

# समाजशास्त्र: विद्याशाखा

**प्र. एक शोधकर्ता निर्वचनात्मक (इंटरप्रिटेटिव) शोध में वस्तुनिष्ठता कैसे प्राप्त करता है?**
**(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)**

**उत्तर:** सामाजिक विज्ञान के विश्वकोष के अनुसार शोध वस्तुओं अवधारणाओं या प्रतीकों आदि को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करता है, जिसका उद्देश्य सामान्यीकरण द्वारा ज्ञान का विकास प्रमाणिकता की जांच अथवा सत्यापन की जांच होता है चाहे वह ज्ञान व्यवहार में सहायक हो या कला में।

- सामाजिक शोध की प्रकृति वैज्ञानिक होती है तथा इसमें निरिक्षण, परिक्षण, तथ्यों के अवलोकन, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण हेतु व्यवस्थित ढंग से वैज्ञानिक पद्धति के सभी चरणों को अपनाया जाता है। सामाजिक शोध में वैज्ञानिक एवं तार्किक पद्धतियों की सहायता से सामाजिक व्यवहार का विश्लेषण करने के पश्चात् सिद्धांतों का निर्माण करने का प्रयास करता है।
- सामाजिक शोध में वस्तुनिष्ठता, सत्यापनशिलता, तटस्थता, व्यवस्थितता तथा भविष्योक्ति पर जोर दिया गया है।

**सामाजिक शोध के उद्देश्य**

- सामाजिक शोध सामाजिक वास्तविकता से सम्बंधित है। अत: इसका उद्देश्य सामाजिक वास्तविकता को यथासंभव वस्तुनिष्ठ एवं क्रमबद्ध रूप में समझना है।
- इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है अपितु ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में पाई जाने वाली समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग में लाना भी है। अत: सामाजिक शोध के निम्नलिखित तीन प्रमुख उद्देश्य हो सकते हैं-

(1) सामाजिक वास्तविकता के बारे में विशुद्ध ज्ञान प्राप्त करना तथा सिद्धांतों का विकास अथवा विस्तार करना,
(2) विशिष्ट समस्याओं का समाधान करना तथा
(3) प्रचलित एवं वर्तमान सिद्धांतों की पुनर्परीक्षण करना।

- वास्तव में सामाजिक शोध का उद्देश्य नवीन तथ्यों की खोज, प्राचीन तथ्यों की नवीन ढंग से विवेचना करते हुए वर्तमान सिद्धांतों की उपयुक्तता का परिक्षण करना तथा उनमें आवश्यक संशोधन करके नवीन सिद्धांतों का निर्माण करना हो सकता है।
- अत: स्पष्ट है कि अनेक विद्वानों ने सामाजिक शोध के उद्देश्यों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक उद्देश्यों की दृष्टि से प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है।

**निष्कर्ष**

सामाजिक शोध मानव के सामाजिक जीवन, सामाजिक घटनाओं एवं सामाजिक जटिलताओं के सम्बन्ध में अन्वेषण का एक वैज्ञानिक प्रयास है, जिसका उद्देश्य नवीन ज्ञान प्राप्त करना अथवा विद्यमान ज्ञान का परिष्कार करना है।

- सामाजिक शोध में वैज्ञानिक एवं तार्किक पद्धतियों की सहायता से सामाजिक व्यवहार का विश्लेषण करने के पश्चात् सिद्धांतों का निर्माण करने का प्रयास किया जाता है। इसमें सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग किया जाता है।

**प्र. आपके विचार से समाजशास्त्र के उदय में 'प्रबोध' के किन पहलुओं ने मार्ग प्रशस्त किया? विस्तारपूर्वक समझाइये।**
**(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)**

**उत्तर:** समाजशास्त्र को उनके राजनीतिक निर्णयों, नैतिकता, आर्थिक विकास, धर्म और कानूनों के संदर्भ में समाजों और उनके विकास के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें सामाजिक जीवन के रूपों में मानव शरीर के संग्रह शामिल है।

- अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में समाजशास्त्र के उद्भव को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख कारको में फ्रांसीसी क्रांति, 'ज्ञानोदय या प्रबोध' (Enlightenment) और औद्योगिक क्रांति है।
- इस समय यूरोप में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्षों के लिए राजनीतिक अर्थतंत्र नामक विषय को अधिक महत्व दिया जाता है, क्योंकि इस विषय से संबधित अध्ययनों ने समाजशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- 18वीं शताब्दी के यूरोप की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं बौद्धिक (प्रबोध) परिस्थितियों ने समाजशास्त्र के उद्भव और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- फ्रांस में राज्य क्रांति हुई, कारखानों पर आधारित नवीन अर्थव्यवस्था अस्तित्व में आई, नगरों का विकास हुआ तथा समुदायों के दमनात्मक शक्ति में कमी आई।
- ब्रिटिश समाजशास्त्री बोटमोर के अनुसार 18वीं शताब्दी की बौद्धिक परिस्थितियां समाजशास्त्र के उदय में सहायक प्रमाणित हुई।
- इस समय राजनीतिक दर्शन, इतिहास के दर्शन, सामाजिक-राजनीतिक सुधार आंदोलन तथा सामाजिक सर्वेक्षण विधि के विकास ने समाज के वस्तुनिष्ठ अध्ययन के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।

# 2

# समाजशास्त्र: विज्ञान के रूप में

**प्र. अन्य सामाजिक विज्ञानों के संबंध में समाजशास्त्र के दायरे में परिसीमित कीजिए।**

**( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022 )**

**उत्तर:** समाजशास्त्री अगस्त कॉम्टे के अनुसार समाज का स्वरूप समग्र है, जिसका अध्ययन अनेक भागों में विभाजित करके नहीं किया जा सकता। सामाजिक विज्ञानों में मानवीय क्रियाओं, समाज और सामाजिक प्रघटनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है।

- समाजशास्त्र समाज के किसी विशेष पहलू का अध्ययन न करके सम्पूर्ण समाज का अध्ययन करता है। इसलिए समाजशास्त्र की प्रकृति अन्य विशेष विज्ञानों की तुलना में भिन्न हो जाना स्वाभाविक है।
- सोरोकिन के अनुसार, समाजशास्त्र अन्य सामाजिक विज्ञानों का जनक नहीं है अपितु उसी प्रकार एक स्वतंत्र विज्ञान है, जिस प्रकार दुसरे सामाजिक विज्ञानों का एक स्वत्रंत अस्तित्व होता है।
- गिलिन के अनुसार, समस्त सामाजिक विज्ञान मुख्य रूप से मानव क्रियाओं और व्यवहारों का उनके सामाजिक समूहों के सदस्य के रूप में अध्ययन करता है। वे आपस में मुख्य रूप से अपनी रुचियों की व्यवस्था के कारण अलग हैं।

**समाजशास्त्र का अन्य विज्ञानों से संबंध**

- समाजशास्त्र को मनोविज्ञान से जोड़कर देखने से पता चलता है कि इसके अंतर्गत हम सामाजिक सीख, मानव व्यक्तित्व एवं मानव व्यवहार को समाज में रहकर ही सिखते हैं।
- विभिन्न समाज विज्ञानों में से प्रत्येक द्वारा सामाजिक-जीवन के किसी न किसी पहलू का अध्ययन किए जाने के कारण उन सभी में पास्परिक संबंधों का होना स्वाभाविक है।
- प्रत्येक समाज विज्ञान समाज और मानवीय क्रियाओं का एक विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन करता है, प्रत्येक का अपना एक विशिष्ट ध्यानबिंदु होता है।
- इस कृति से प्रत्येक सामाजिक विज्ञान की अपनी-अपनी विशिष्ट विषय वस्तु या अध्ययन सामग्री है और प्रत्येक ने अपनी विशेष अध्ययन पद्धतियों को विकसित भी किया है।
- अत: जहां तक समाजशास्त्र का अन्य समाज विज्ञानों के साथ संबंध का प्रश्न है तो यह इन सभी में पारस्परिक आदान-प्रदान है। समाजशास्त्र अन्य समाज विज्ञानों से और अन्य समाज विज्ञान समाजशास्त्र से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं।
- विभिन्न समाज विज्ञानों के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बंधित होने के बावजूद समाजशास्त्र का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है।

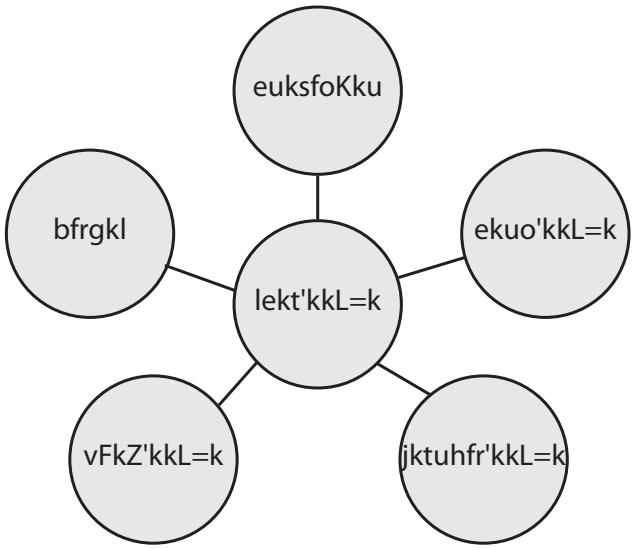


**प्र. सामाजिक विज्ञान में सूचना तथा आंकड़ों के बीच अंतर सूक्ष्म है। टिप्पणी कीजिए।**

**( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022 )**

**उत्तर:** सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में सूचना तथा आंकड़ों का महत्वपूर्ण स्थान है। आंकड़े विभिन्न विधियों द्वारा उत्तरदाताओं से संग्रहित की जाने वाली सूचना में प्रतिबिंबित होता है।

- आमतौर पर, ''डेटा'' और ''सूचना'' शब्द का परस्पर उपयोग किया जाता है। हालांकि, दोनों के बीच एक सूक्ष्म अंतर है।
- संक्षेप में, डेटा एक संख्या, प्रतीक, वर्ण, शब्द, कोड, ग्राफ आदि हो सकता है।
- दूसरी ओर, सूचना डेटा को संदर्भ में रखा जाता है। सूचना का उपयोग मानव द्वारा कुछ महत्वपूर्ण तरीके से किया जाता है (जैसे निर्णय लेने, पूर्वानुमान आदि करने के लिए)।
- आंकड़ों के व्यवस्थित सम्बन्ध के आधार को निश्चित कर ही सिद्धांत को प्रतिपादित किया जाता है।
- इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक विधि का प्रयोग कर आंकड़ों का संकलन कारण सामाजिक शोध का एक महत्वपूर्ण कदम है।

# 3

# अनुसंधान पद्धतियां एवं विश्लेषण

**प्र. समाजशास्त्री सामाजिक असमानता के विश्लेषण में लिंग (जेंडर) की परिकल्पना कैसे करते हैं?**
**(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)**

**उत्तर:** लिंग (जेंडर) असमानता समाज के विभिन्न आयामों में दिखाई पड़ती है। पुरुष तथा नारी विभेद जो कि शक्ति, संपत्ति तथा सम्मान के रूप में समाज में दिखाई देते हैं। समाजशास्त्री समाज में लिंग असमानता को निम्न सन्दर्भों में देखते हैं-

- शिक्षा के क्षेत्र में असमानता
- राजनीति तथा प्रतिनिधित्व के सन्दर्भ में असमानता
- रोजगार तथा अवसरों की असमानता
- हिंसा तथा गैर-बराबरी
- परिवार के सन्दर्भ में संपत्ति के अधिकार के गैर-बराबरी।

**लिंग**
जैविक लक्षण जो समाज में पुरूष और महिलाओं से जुड़ा है

**लैंगिक**
स्त्री और पुरूष का सांस्कृतिक अर्थ, जो उनके व्यक्तिगत पहचान को प्रभावित करता है

**लैंगिकता**
यौन आकषर्ण और पहचान, जो विपरीत लिंग के साथ संरेखित हो भी सकता है और नहीं भी

- विभिन्न लिंगियों के बीच संबंधों के सामाजिक पक्ष के सन्दर्भ में जेंडर (लिंग), जैवकीय यौन भेद (सेक्स) से अलग की जाती है। पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक विज्ञानों में लिंग के सामाजिक पक्ष को उसके जैवकीय पक्ष से अलग कर जेंडर के रूप में उसे समझाने का प्रयास किया गया है।
- अन्न ओकले के अनुसार, लैंगिकता का तात्पर्य पुरुषों एवं स्त्रियों का जैवकीय विभाजन से है तथा जेंडर का अर्थ स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व के रूप में सामानांतर और सामाजिक रूप में असमान विभाजन से है।
- अत: जेंडर की अवधारणा स्त्रियों और पुरुषों के बीच सामाजिक रूप में निर्मित भिन्नता के पहलुओं पर ध्यान आकर्षित करती है।
- आजकल जेंडर का प्रयोग व्यक्तिगत पहिचान और व्यक्तित्व को इंगित करने के लिए नहीं किया जाता, अपितु प्रतीकात्मक स्तर पर इसका प्रयोग सांस्कृतिक आदर्शों तथा पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व संबंधी रुधिबद्ध धारणाओं तथा संरचनात्मक अर्थों में, संस्थाओं और संगठनों में लैंगिक श्रम-विभाजन के रूप में भी किया जाता है।
- विभिन्न समाजों में लैंगिक संबंधों के भिन्न रूप-स्वरुप हैं। सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों में लिंग भेद की रचना और अभिव्यक्ति की जाती है। यह संस्कृति, विचारधारा और तार्किक धारणाओं तक ही सीमित नहीं है। घर में लैंगिक श्रम-विभाजन से लेकर श्रम बाजार तक, राज्य की व्यवस्था में, हिंसा की रचना में और सामाजिक संगठन के कई पक्षों में लैंगिक संबंधों की रचना होती है।

**निष्कर्ष**

वर्तमन में भारतीय समाज में नए-नए कानूनों के मध्यम से महिला प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करना, शिक्षा के अधिकार को मूलभूत अधिकार बनाकर कानून का निर्माण करना, यौन उत्पीडन के विरुद्ध तथा घरेलू हिंसा के विरुद्ध कानून का निर्माण करना आदि विभिन्न आयामों में लिंग असमानता को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

**प्र. समाजशास्त्री समावेशी विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लोकतंत्रीकरण का तर्क देते हैं। टिप्पणी कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)**

**उत्तर:** विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लोकतंत्रीकरण, विज्ञान के विषय में विभिन्न निर्णयों को शामिल करने के लिए लोकतांत्रिक नियंत्रण के दायरे का विस्तार करता है।

- यह ''विशेषज्ञता का लोकतांत्रीकरण'' करने के प्रयासों को शामिल करता है, जो ''विशेषज्ञता'' के विभिन्न रूपों को पहचान कर वैज्ञानिकों और आम लोगों के बीच की सीमाओं को कम करता है। लोकतंत्रीकरण की एक राजनीतिक भावना भी है।
- सामाजिक जीवन का एक क्षेत्र लोकतांत्रिक रूप से शासित होता है, जब सभी संबंधित पक्षों को अपनी प्राथमिकताओं, रुचियों और मूल्यों की उचित विकास करने के समान अवसर मिलते हैं। तदनुसार, विज्ञान का लोकतंत्रीकरण संदर्भित करता है कि-

(1) विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर जनता के प्रभाव में वृद्धि
(2) जनता के सदस्यों के बीच प्रभाव के अवसर की समानताय तथा
(3) उन स्थितियों की प्राप्ति, जो जनता के सदस्यों को उनके हितों और मूल्यों की उचित विकास करने में सक्षम बनाती हैं।

# 4

# समाजशास्त्री चिंतक

**प्र. दुर्खीम ने तर्क दिया कि समाज व्यक्तिगत कृत्यों के योग से अधिक है। चर्चा कीजिए।**

**( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022 )**

**उत्तर:** एमिल दुर्खीम के अनुसार समाज 'अपने व्यक्तिगत भागों के योग से अधिक' है। दुर्खीम का मानना है कि व्यक्तिगत क्रिया सामाजिक संरचना से बहुत अधिक आकार लेती है।

- दुर्खीम की 'होलिस्ट प्रोजेक्ट' (Holist Project) का दावा है कि समाज के भीतर ऐसे 'सामाजिक तथ्य' हैं, जो व्यक्ति के लिए बाहरी हैं, और व्यक्ति के लिए कम नहीं हैं।
- दुर्खिम के अनुसार सामाजिक तथ्य 'अनुरूपता; सामूहिक व्यवहार और अभिनय, सोच और भावना के सामूहिक तरीके को दर्शाते हैं।
- दुर्खीम व्यक्ति के स्तर से परे सामाजिक कार्य-कारण के अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास करता है, जैसा कि खुद दुर्खीम ने उद्धृत किया है, ''व्यक्ति पर एक नैतिक वास्तविकता का प्रभुत्व है, जो उसे पार करती है-एक सामूहिक वास्तविकता''।
- दुर्खीम का यह भी मानना था कि सामाजिक एकीकरण, या लोगों के अपने सामाजिक समूहों के साथ संबंधों की ताकत, सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण कारक था।
- कॉम्टे और स्पेंसर (Comte and Spencer) के विचारों के बाद, दुर्खीम ने समाज की तुलना एक जीवित जीव से की, जिसमें प्रत्येक अंग जीवित रहने में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। यहां तक कि समाज के सामाजिक रूप से विचलित सदस्य भी आवश्यक हैं, दुर्खीम ने तर्क दिया, क्योंकि विचलन के लिए दंड स्थापित सांस्कृतिक मूल्यों और मानदंडों की पुष्टि करता है। यानी अपराध की सजा हमारी नैतिक चेतना की पुष्टि करती है।
- दुर्खीम ने 1893 में लिखा था कि ''अपराध एक अपराध है क्योंकि हम इसकी निंदा करते हैं,''। ''एक कार्य सामान्य चेतना को ठेस पहुंचाता है क्योंकि यह आपराधिक नहीं है, बल्कि यह आपराधिक है क्योंकि यह उस चेतना को ठेस पहुंचाता है''।
- दुर्खीम ने समाज के इन तत्वों को ''सामाजिक तथ्य'' कहा है। इससे उनका तात्पर्य यह था कि सामाजिक शक्तियों को वास्तविक माना जाना चाहिए और व्यक्ति के बाहर मौजूद होना चाहिए।

**निष्कर्ष**

दुर्खीम ने समझाया कि पूर्व-औद्योगिक समाज यांत्रिक एकजुटता, श्रम के न्यूनतम विभाजन और एक सामान्य सामूहिक चेतना के माध्यम से बनाए रखा गया एक प्रकार का सामाजिक आदेश द्वारा एक साथ रखा गया था।

- ऐसे समाजों ने निम्न स्तर की व्यक्तिगत स्वायत्तता की अनुमति दी। अनिवार्य रूप से व्यक्तिगत अंत:करण और सामूहिक अंत:करण के बीच कोई अंतर नहीं था।
- यांत्रिक एकजुटता वाले समाज एक यांत्रिक फैशन में कार्य करते हैंय चीजें ज्यादातर इसलिए की जाती हैं क्योंकि वे हमेशा इसी तरह से की जाती रही हैं।

**प्र. प्रत्यक्षवादी दर्शन की वो कौन सी कमियां हैं जो सामाजिक यथार्थता के अध्ययन में अप्रत्यक्षवादी पद्धतियों को जन्म देती हैं? ( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022 )**

**उत्तर:** जब विद्वानों ने यह महसूस किया कि समाजशास्त्रीय मुद्दों को केवल निश्चित कानूनों का उपयोग करके संबोधित नहीं किया जा सकता है, तो वे प्रत्यक्षवाद से गैर-प्रत्यक्षवाद में बदल गए। जबकि प्रत्यक्षवादी पद्धतियों ने समाज को और मनुष्य को उसके नियमों द्वारा शासित होने के रूप में देखा।

- दूसरी ओर गैर-प्रत्यक्षवादियों ने मनुष्य को स्वतंत्र सोच वाला व्यक्ति माना जो समाज को भी प्रभावित कर सकता है। उन्होंने मनुष्य की अति-सामाजिक अवधारणा को खारिज कर दिया। इस प्रकार, गैर-प्रत्यक्षवादी पद्धतियों ने यह पता लगाने की कोशिश की कि मनुष्य के दिमाग में क्या चल रहा है और यह समाज को कैसे प्रभावित करता है।
- औपचारिक अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र की स्थापना से पहले भी, ऐसे विचार 18 वीं शताब्दी के अंत में प्रचलित थे जब जर्मन 'आदर्शवादी' स्कूल ने सामाजिक वास्तविकता को अलग तरह से परिभाषित करने का प्रयास किया था।
- डिल्थे और रिकर्ट जैसे विद्वानों ने प्राकृतिक और सामाजिक दुनिया के बीच अंतर पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार सामाजिक दुनिया अर्थ, प्रतीकों और उद्देश्यों के संदर्भ में मानव समाज की विशिष्टता पर आधारित है।

1

द्वितीय प्रश्न-पत्र

# भारतीय समाज के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य

**प्र. भारतीय समाज के अध्ययन के लिए एम-एन-श्रीनिवास के संरचनात्मक-प्रकार्यवादी उपागम की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए। ( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022 )**

**उत्तर:** श्रीनिवास की समाजशास्त्रीय कल्पना चालीस और पचास के दशक में तैयार की गई थी जब भारत औपनिवेशिक से स्वतंत्रता के बाद की अवधि में स्थानांतरित हो रहा था और जब राष्ट्रवादी विचारों ने समकालीन यूटोपिया की संरचना की थी।

- एम.एन.श्रीनिवास ने भारत में समाजशास्त्र को एक 'संरचनात्मक प्रकार्यवादी' विषय के रूप में स्थापित किया।
- उन्होंने विश्लेषण किया कि कैसे विभिन्न सांस्कृतिक तत्व कुर्ग समाज की एकजुटता में योगदान करते हैं। उनका प्रमुख योगदान तत्कालीन प्रचलित प्रमुख प्रतिमान को चुनौती देना था, जो भारतीय समाज को विशुद्ध रूप से शाब्दिक दृष्टिकोण से समझने पर केंद्रित था और इस प्रक्रिया में, उन्होंने विशेष रूप से हिंदू समाज और सामान्य रूप से भारतीय समाज को समझने के लिए नए ढांचे की शुरुआत की।

**श्रीनिवास के संरचनात्मक प्रकार्यवाद**

**जाति का अध्ययन करने के लिए एम. एन. श्रीनिवास 'संरचनात्मक प्रकार्यवाद'**

श्रीनिवास ने जाति का अध्ययन संरचनात्मक प्रकार्यात्मक तरीके से किया। उन्होंने जाति के निम्नलिखित कार्यात्मक गुणों पर प्रकाश डाला।

**जैविक प्रगति**

श्रीनिवास गांव की आबादी को जाति और व्यवसाय के आधार पर बांटते हैं और फिर इन जातियों के कृषि से उनके संबंध की जांच करते हैं और इन्हें अपने व्यवसाय से जोड़ते हैं।

- यहां विचार एक दूसरे के साथ जातियों के जैविक एकीकरण को दिखाने के लिए हैं और जिस तरह से ये एक दूसरे के साथ संबंध रखते हैं।

**अनुकूल प्रगति**

इसके तहत श्रीनिवास ने एक अनुकूली जाति संरचना स्थापित करने का प्रयास किया, जो सदियों से खुद को बार-बार पुन: उत्पन्न कर रही है - वृद्धिशील सामाजिक परिवर्तन का एक सिद्धांत।

- उन्होंने जाति व्यवस्था के निरंतर अनुकूली चरित्र और परिवर्तन की आधुनिक प्रक्रियाओं में समायोजित करने की क्षमता पर प्रकाश डाला और गतिशीलता के लिए दो रास्ते प्रस्तुत किए, जो कि संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण है।
- ये परिवर्तन जाति को नए प्रभावों के अनुकूल बनाते हैं, इसकी विशेषताओं को संशोधित और नियंत्रित करते हैं, लेकिन इसे बदलने या पूरी तरह से गायब होने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं।

**भारत में नृवंशविज्ञान अध्ययन में संरचनात्मक कार्यात्मकता का अनुप्रयोग**

- नृवंशविज्ञान कार्यात्मक प्रतिमान से संबंधित था और उन्नीसवीं शताब्दी की ब्रिटिश उदार विचारधारा के सिद्धांतों के संदर्भ में तैयार किया गया था।
- इसने विषय और वस्तु के बीच अंतर किया और सुझाव दिया कि विषय, सामाजिक वैज्ञानिक, को अपने द्वारा देखी गई वस्तु से अलग होना चाहिए।
- श्रीनिवास इस स्थिति से सहमत नहीं थे कि गांव एक आत्मनिर्भर और अलग-थलग इकाई है, नृवंशविज्ञान अध्ययन की एक इकाई के रूप में गांव पर जोर देने से उनके प्रतिमान सिद्धांतों ने उनके स्वीकृत इरादों का खंडन किया।

**निष्कर्ष**

सामाजिक नृविज्ञान और समाजशास्त्र में, श्रीनिवास का प्रयास सामाजिक मानवशास्त्रीय सिद्धांत और पद्धति का उपयोग करने की आवश्यकता को न्यायसंगत और वैध बनाना है।

- वह भारत में समाजशास्त्र की प्रचलित प्रथाओं का एक तरफ सामाजिक दर्शन और दूसरी तरफ सामाजिक कार्य, और संरचनात्मक कार्यात्मकता में इसके समकालीन क्रियाकलापों आलोचना करते हैं।
- श्रीनिवास ने भारत में नृविज्ञान को एक संरचनात्मक प्रकार्यवादी अनुशासन के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

**प्र. लीला दुबे की ''बीज तथा भूमि'' की अवधारणा को समझाइए। ( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022 )**

**उत्तर:** लीला दुबे ने अपने एक महत्वपूर्ण लेख ऑन द कंस्ट्रक्शन ऑफ जेंडर : हिन्दू गर्ल्स इन पैट्रिलिनियल इंडिया में लीला दुबे ने उन क्रियातंत्रों का पता लगाया है, जिनके माध्यम से बालिकाएं परिवारों

# 2

# भारतीय समाज पर औपनिवेशिक शासन का प्रभाव

**प्र. 'जाति-निर्मूलन' की अवधारणा से डॉ. भीमराव अंबेडकर का क्या तात्पर्य है? ( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2021 )**

**उत्तर:** डॉ. बी.आर. अम्बेडकर 20वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे। उन्होंने जाति व्यवस्था को सामान्य रूप से भारतीय समाज और विशेष रूप से दलितों की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा के रूप में देखा। इसे समाप्त करने के लिए उन्होंने जाति व्यवस्था के उन्मूलन (Annihilation of the Caste System) का आह्वान किया।

अम्बेडकर के अनुसार, जाति व्यवस्था उन शास्त्रों और पुराणों से उत्पन्न हुई है, जो शोषण व्यवस्था को एक धार्मिक औचित्य प्रदान करती हैं। उनका मानना था कि जाति व्यवस्था शास्त्रों एवं पुराणों से जुड़ी दैवीय मान्यताओं के कारण बनी हुई है। जैसे- कर्म की अवधारणा, पुरुष सूक्त में जाति की उत्पत्ति का सिद्धांत आदि। इसलिए, जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए सबसे पहले शास्त्रों की पवित्रता में विश्वास को नष्ट करना होगा।

**जाति उन्मूलन के लिए डॉ. बी.आर. अम्बेडकर द्वारा प्रस्तावित विभिन्न उपाय इस प्रकार हैं:**

- हिंदुओं के पास सभी जातियों के लिए एक मानक पुस्तक होनी चाहिए जो सभी हिंदुओं को स्वीकार्य हो।
- पुरोहित व्यवस्था (Priesthood should) को समाप्त किया जाना चाहिए, यदि ऐसा संभव न हो सके तो कम से कम इसकी वंशानुगत व्यवस्था को समाप्त किया जाना चाहिए।
- पुरोहित व्यवस्था सभी हिंदुओं के लिए खुली होनी चाहिए और राज्य द्वारा विनियमित होनी चाहिए। उन्होंने पुरोहित के लिए राज्य द्वारा आयोजित एक परीक्षा का प्रस्ताव रखा।
- पुजारियों की संख्या राज्य द्वारा सीमित होनी चाहिए।
- उन्होंने जातिगत सीमाओं के उन्मूलन के एक तरीके के रूप में अंतर्जातीय विवाह का भी प्रस्ताव रखा।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार उपर्युक्त प्रस्ताव स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित एक नई सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए आधार प्रदान करेंगे।

संक्षेप में कहें तो, ये प्रस्ताव लोकतंत्र स्थापित करने के साथ जाति-व्यवस्था के उन्मूलन में सहायक सिद्ध होंगे।

**प्र. भारत में 'नव मध्यम वर्ग' के विशिष्ट लक्षणों की चर्चा करें। ( सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2021 )**

**उत्तर:** समाजशास्त्री एंथोनी गिडेंस (Anthony Giddens) के अनुसार 'मध्य वर्ग' उन लोगों के समूह को संदर्भित करता है, जो अपनी साख और कौशल के आधार पर अपने लिए एक स्तरीकृत सामाजिक संरचना का निर्माण कर लेते हैं।

भारत में 'पुराने मध्यवर्ग' (Old Middle Class) का विकास ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरूप हुआ है। बी.बी. मिश्रा के अनुसार पुराने मध्यवर्ग ब्रिटिश हितों को पूरा करने के लिए बिचौलियों के एक वर्ग के रूप में उभरे। इस समूह में मुख्य रूप से उच्च जाति के व्यक्ति शामिल थे और उन्हें आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा और आधुनिक उदारवादी दृष्टिकोण की समझ थी। स्वतंत्रता के बाद धीरे-धीरे विशिष्ट विशेषताओं के साथ एक नया मध्यम वर्ग (New Middle Class) का उभार हुआ।

**भारत में नए मध्यम वर्ग की विशेषताएं**

- 'नए मध्यम वर्ग' में पुराने मध्यम वर्ग के विपरीत कुशल और सफेदपोश श्रमिक (White Collar Workers) शामिल हैं, इसके अंतर्गत मुख्य रूप से निम्न पूंजीपति वर्ग को प्राथमिकता दी गई है।
- नए मध्यम वर्ग में आरक्षण और आधुनिक शिक्षा जैसे कारकों के कारण कुछ एससी और एसटी समुदायों को भी शामिल किया गया है।
- नया मध्यम वर्ग नौकरी की सुरक्षा के बजाय नौकरी से संतुष्टि चाहता है।
- वे अपने जन्म स्थान से भावनात्मक रूप से जुड़े नहीं हैं। इसलिए वे उच्च भौगोलिक गतिशीलता प्रदर्शित करते हैं।
- उनका धार्मिक दृष्टिकोण आमतौर पर धर्मनिरपेक्ष होता हैं।
- वे उद्यमों में अपने कौशल का बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश करते हैं, जिसे इस तथ्य में देखा जा सकता है कि कई सफल स्टार्टअप नए मध्यम वर्ग के सदस्यों द्वारा शुरू किए गए हैं।
- वे सामाजिक अंत:क्रियाओं में फेसलेस रिश्तों (Faceless Relationships) और अवैयक्तिकता (Impersonality) की विशेषता भी रखते हैं।